The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 3, Issue 1 - 2019

दुष्यन्त कुमार की कविताओं में देश की दशा पर व्यथा

उमाकान्त*

एक विस्तृत भू-भाग जिस पर विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, जाति-वर्गों के लोग स्वतंत्रतापूर्वक अपना जीवन जीने में संलग्न हैं; विभिन्न रीति-रिवाज़ों-संस्कारों से जुड़कर समाज का निर्माण किए हुए एक साथ चलने का प्रयत्न कर रहे हैं- सबका एक सामूहिक नाम 'देश' अत्यंत छोटे शब्द द्वारा परिभाषित सामूहिक पहचान लिए हुए है। दुष्यन्त कुमार के काव्य में देश की दशा और उसकी व्यथा पर चिंता व्यक्त की गयी है। दुष्यन्त कुमार को जन-जन की पीड़ा के कवि के रूप में पहचाना जाना चाहिए, क्योंकि उनका साहित्य उनके देश के प्रति लगाव, चिन्ता और उसके बदहाल होने की स्थिति पर बेचैनी को व्यक्त करता है। स्वतंत्रता के बाद के भारत की तस्वीर खींचते हुए दुष्यन्त जी ने चिंता व्यक्त की है उन्हें राजनीति की बाँबी में घुसे अनेक ज़हरीले सांपों द्वारा देश को कभी भी डसे जाने का भय सताता है। वे वास्तव में जनता के ऐसे प्रतिनिधि कवि हैं जो स्वयं कष्टों को भोगकर उन्हें अपनी लेखनी द्वारा समाज हित में समर्पित करते हैं। न जाने कितनी पीढ़ियाँ गुजर गईं समस्याओं से जूझते हुए मगर देश की हालत अब भी सोचनीय है। देश की जनता पहले विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा सताई गई और बाद में अपने ही देश के कुछ पूँजीपतियों, नेताओं और नौकरशाहों द्वारा शोषण का शिकार हो रही है, उसे केवल वोटों के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

जनता की सेवा करने वालों की भीड़ चुनाव के वक्त इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उन्नति और विकास के सपने केवल दुस्स्वप्न की तरह लगने लगते हैं। देश भक्ति के गीत बजाते हुए नेताओं की भाषणबाजी, जनता को बरगलाने की नई-नई तरीकीबें, डोंडी पिटवाकर देश भक्ति को अखबारों की शोभा बनाने के काम आती है। बेबस जनता जो स्वयं ही आजीविका के लिए सुबह से शाम तक जूझती है, झूठे वादों के झाँसे में आने को मजबूर होती है। देश की स्थिति पर संजीदा दुष्यन्त कुमार अपने काव्य में चिन्ता व्यक्त करते दिखाई देते हैं। उनके कविता संग्रह-'जलते हुए वन का बसन्त', 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे' में उनके ऐसे ही विचारों के दर्शन होते हैं। देश की स्थिति पर चिन्ता को दुष्यन्त कुमार जी ने राजनीतिक निराशा, अतीत के अनुभव, दिखावा, जनता की निराशा, राष्ट्रीय चेतना का अभाव, शोषण, देश की दुरावस्था, राजनीति पर व्यंग्य, अवसरवादिता, राजनीतिक वायदों की वास्तविकता, आधुनिकता में घुटती मानवीयता, जनता और शासक वर्ग की अपनी-अपनी मनोदशा का चित्रण करके प्रकट करने का प्रयत्न किया है।

---

*शोध छात्र, क्राइस्ट चर्च पी0जी0 कॉलेज, कानपुर।

Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

यथार्थ चित्रण

देश की स्थिति और उसकी मनोदशा का चित्रण दुष्यन्त कुमार उसके वास्तविक रूप में करते हैं। समाज में क्या घटित हो रहा है, सामान्य जन के मानस पटल पर कैसे विचार कौंध रहे हैं, वह किन समस्याओं से जूझ रहा है? देश के प्रति उसका दायित्व क्या है? दुष्यन्त बखूबी जानते हैं। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उपजी निराशा को वे अपनी कलम की आवाज देते हैं। किसी का विरोध करना कितना दुष्कर कार्य होता है, दुष्यन्त जी भलीभांति जानते हैं। देश की ऐसी स्थिति के लिए ज़िम्मेदार व्यक्तियों पर लिखने पर वे झिझकते नहीं है। उसका परिणाम क्या होगा जानते हुए भी परवाह नहीं करते। 'सूर्य का स्वागत' कविता संग्रह में संकलित कविता 'परिणति' में दुष्यन्त कुमार जी सुखद भविष्य की कल्पना को उस प्रेम पत्र के समान बताते हैं जिसकी परिणति टुकड़ों में होती है। स्वतंत्रता के पूर्व के सपनों का स्वतंत्रता पश्चात् ऐसा ही हाल हुआ। दुष्यन्त की ये पंक्तियाँ प्रकट करती हैं-

"किसी प्रेम-पत्र सदृश

आज वह भविष्यत्!

फर्श पर टुकड़ों में बिखरा पड़ा है

क्षत्-विक्षत!'[1]

राजनीतिक निराशा की अभिव्यक्ति

देश के राजनीतिज्ञों द्वारा उठाए गए वे कदम जिनके कारण देश की जनता को किसी अन्य देश के सामने झुकने पर मजबूर होना पड़ा। भारत विभाजन की त्रासदी हो या चीन के आगे घुटने टेकना देश की बागडोर संभालने वाले राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता को ही बताते हैं। राजनेताओं के आपसी विद्वेष की भावना समूचे राष्ट्र के लिए घातक बनती है। जनता उम्मीदों के घोड़े दौड़ाती है और वे घोड़े मोम के निकलते हैं। दुष्यन्त कुमार की कविता 'मोम का घोड़ा' इसी राजनीतिक निराशा को प्रकट करती है। देश के अमर सपूतों के बलिदानों की गाथा राजनेताओं की प्रेरणा नहीं बन पाती यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जनता की सेवा का जिम्मा उठाने वाले अपनी सेवा करवाने लगते हैं, तब जनता के हाथ केवल निराशा ही आती है। देश के सुधार के लिए उसकी उन्नति के लिए किए जाने वाले बड़े-बड़े वायदों की सच्चाई पन्नों पर सिमट जाती है, धरातल पर नहीं दिखती। दुष्यन्त जी ने राजनीति के इन रहनुमाओं से विक्षुब्ध होकर 'मोम का घोड़ा' कविता के माध्यम से राजनीतिक निराशा की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार की है-

"किन्तु जैसे ये बढ़ा

इसकी पीठ पर पड़ा

आकर

लपलपाती लपटों का कोड़ा,

तब पिघल गया घोड़ा

और मोम मेरे सब सपनों पर फैल गया।'[2]

सृजन प्रेरणा

देश की स्थिति पर, जनता की मनोदशा पर, समाज में घटित होने वाली दिन प्रतिदिन की घटनाओं पर, कवि लिखता ही रहता है। कवि कर्म एक ऐसा कर्म है जिसे करने के पश्चात् रचनाकार को अपार शान्ति का अनुभव होता है। देश की पीड़ा को, जनता की निराशा को, कवि अपने हृदय में समेटे निरन्तर चलने से अच्छा उसे काव्य के माध्यम से दूने उत्साह से पुनः

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

जनता तक पहुँचाने और उसे प्रोत्साहन देने का पुनीत कार्य करता है। इस कार्य की प्रेरणा ही सृजन प्रेरणा बनकर कवि को सामान्य से विशिष्ट बना देती है। दुष्यन्त कुमार ऐसे ही एक ओजस्वी कवि हैं जो देश की हर परिस्थिति, हर स्थिति को अपने भीतर घुटन के रूप में महसूस करते हैं और उसे अभिव्यक्त करने हेतु जन-जन तक पहुँचाने के लिए काव्य को साधन के रूप में प्रयुक्त करते हैं। उनकी कविता 'अभिव्यक्ति का प्रश्न' में इसी सृजन प्रेरणा का स्वर मुखरित हुआ है-

"प्रश्न अभिव्यक्ति का है मित्र!

ऐसा करो कुछ

जो मेरे मन में कुलबुलाता है

बाहर आ जाय।

भीतर शान्ति छा जाय।'[3]

दिखावे की राजनीति

बात देश प्रेम की हो या देश सुधार की, जनता की भलाई हो या धार्मिक उदारता आज स्थितियाँ ये हैं कि हर तरफ दिखावे का ही माहौल है। राजनेता दूषित मानसिकता के शिकार हो रहे हैं, राजनीति में अपना कद ऊँचा करने के लिए सरकस के नट की भाँति कलाबाजी दिखाने की होड़ में लगे हुए हैं। उन्हें न तो देश की चिन्ता है न ही समाज की, उनका एक ही उद्देश्य है, सरकारी धन को अपना बनाना, उसकी बन्दर बाँट करना और जनता को बहलाने के लिए देश प्रेम नाम का एक झुनझुना पकड़ाना। जनता कुछ समय तक तो इस झुनझुने का आनन्द लेती है फिर बालक की भाँति मन उचटता है, तो राजनीति में कमियाँ तलाशना शुरू करती है। राजनेताओं को इसका अनुमान भी होता है। इसलिए वे तब तक कुछ नया तमाशा दिखाने लगते हैं। तात्पर्य यह है कि जनता को अंधी भेड़ मानने वाले राजनेता देश की चिन्ता न तो करते हैं और न ही यह भावना उन्हें प्रेरित करती है। दुष्यन्त कुमार ने इसी दिखावे पर व्यंग्य करते हुए 'देश-प्रेम' नामक कविता में इसका बड़ा ही सुन्दर चित्र अंकित किया है। दृष्टव्य हैं ये पंक्तियाँ-

"कोई नहीं देता साथ,

सभी लोग युद्ध और देश-प्रेम की बातें करते हैं।

बड़े-बड़े नारे लगाते हैं।

मुझसे बोला भी नहीं जाता

जब लोग घंटो राष्ट्र के नाम पर आँसू बहाते हैं

मेरी आँख में एक बूँद पानी नहीं आता।'[4]

निराशा एवं अस्थिरता

देश की जनता नेताओं के कारनामों तथा स्वयं की पीड़ाओं के कारण हताश, निराश तथा अस्थिर हो रही है। दुष्यन्त कुमार इस पीड़ा को देश के लिए महसूस करते हैं। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक हर क्षेत्र में जनता को जब निराशा हाथ लगती है तो उसके स्वभाव में निराशा के चिह्न दिखाई देने लगते हैं और जो बात जनता में दिखने लगती है, कवि में दिखाई देना स्वाभाविक हो जाता है। दुष्यन्त जी का काव्य इस बात का प्रमाण है कि वे देश की पीड़ा से अत्यंत पीड़ित हैं। उनकी कविता 'गाते-गाते' में उनका यह भाव उभर कर सामने आता है कि किस प्रकार भावना के स्तर को छोड़ कवि व्यावहारिक बन गया है। एक लम्बे अंतराल के बाद भी जब सुखद स्वप्नों की नींद की परिणति दुःख की वास्तविकता में होती है तो कवि स्वयं पर भी क्रोधित हो उठता है। उसे याद हैं वे पल जब कोरे और खोखले भाषणों को सुनने में तालियाँ बजाने में सारा-सारा दिन भूखे प्यासे गुज़ार

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

दिए थे, किन्तु जब उन्हीं वायदों का सच सामने आया तो निराशा का तुषारापात होना निश्चित था। उनकी कविता 'गाते-गाते' की ये पंक्तियाँ ऐसी ही निराशा व अस्थिरता को प्रकट करती हैं-

"नेताओं!

मुझे माफ करना

जरूर कुछ सुनहले स्वप्न होंगे-

जिन्हें मैंने नहीं देखा।

मैंने तो देखा

जो मशालें उठाकर चले थे

वे तिमिर जयी,

अँधेरे की कहानियाँ सुनाने में खो गये।'[5]

राष्ट्रचेतना का अभाव

जो मानव-सामंजस्य की भावना समाज में विकसित होकर सम्पूर्ण राष्ट्र की भक्ति का माध्यम बनती थी, आज उस राष्ट्र चेतना की भावना की स्थिति बड़ी गम्भीर होती जा रही है। उन रोने वालों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है जो घड़ियाली आँसू बहाते हैं, राष्ट्र के नाम पर। जबकि सत्य यह है कि किसी को भी देश की चिन्ता नहीं है। आज नेताओं की स्थिति तो समुद्र में बहती लाश पर बैठे उस कौए जैसी हो गई है जो उसी को खा रहा है जिस पर बैठा है, जिसका अन्त उसे स्वयं दिखाई नहीं दे रहा। दुष्यन्त कुमार के काव्य में राष्ट्र चेतना की भावना के लगातार हो रहे ह्रास पर चिन्ता व्यक्त की गई है। उन्हें महसूस होता है कि आने वाले समय का वीभत्स मंज़र जिसमें हर तरफ लूट-खसोट मची हुई होगी और वे स्वयं इस दृश्य की भयावहता से सिहर उठते हैं। ऐसी ही परिस्थिति के विषय में दुष्यन्त जी ने अपनी कविता 'सुबह: समाचार पत्र के समय' में देश की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि राष्ट्र चेतना का होना कितना आवश्यक है, जिसके अभाव में वास्तविकता दिखाई तक नहीं देती। दृष्टव्य हैं उनकी ये पंक्तियाँ-

"चौंकाती नहीं हैं दुर्घटनाएँ

कितना स्वीकार्य और सहज हो गया है परिवेश

कि सत्य

चाहे नंगा होकर आए, दिखता नहीं है।'[6]

देश की दुरावस्था पर चिन्ता

आज परिस्थितियाँ कितनी बदल गई हैं कि देश के लिए किसी के पास समय तक नहीं है। स्वार्थपरता व्यक्ति पर इतनी हावी हो चुकी है कि उसको अपने लाभ के अतिरिक्त कुछ नहीं दीखता, न मानवता के लिए उसके मन में त्याग बचा, न समाज के लिए सद्भावना, न स्वस्थ विचारधारा, न ही देश के लिए ज़िम्मेदारी का एहसास। इंसान आज मशीन की तरह काम करने में संलग्न सुबह से शाम तक अपने पड़ोसी तक को नहीं देखता, तब देश के विषय में कब सोचे? किन्तु देश भी तो उससे कुछ चाहता है इसका उसे अनुमान तक नहीं है। हमारा गौरवशाली अतीत केवल भाषणबाजी के लिए बचा है। रीति-रिवाज़ केवल ढोने के लिए बचे हैं, जिन्हें लकीर का फकीर बनकर पीटते जाना है। देश की इस स्थिति के लिए ज़िम्मेदार देश के रहनुमाओं के लिए दुष्यन्त कुमार ने अपनी कविता 'देश' की इन पंक्तियों में देश की दुरावस्था का एक सजीव चित्र खींचने का प्रयास किया है-

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

"संस्कारों की अरगनी पर टँगा

एक फटा हुआ बुरका

कितना प्यारा नाम है उसका-देश।'[7]

अवसरवादिता

राजनीति के पक्ष में ही दुष्यन्त कुमार ने अवसरवादी नेताओं के कार्य व्यापार व मनोभावों को अपने काव्य में स्थान दिया है। ऐसे लोगों का कोई सिद्धान्त नहीं होता, कोई चरित्र नहीं होता, स्थायित्व नहीं होता। ऐसे नेता देश के लिए घातक सिद्ध होते हैं जो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए देश विरोधी नीतियों में भी संलिप्त होने में हिचकते नहीं है। आज देश की स्थिति से स्पष्ट होता है कि जनता का रक्षक अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं कर रहा। अपने कार्यकाल में वह केवल अपना ही हित करने में लिप्त है। दुष्यन्त कुमार की कविता 'मंत्री की मैना' में उन्होंने इसी अवसरवादिता को चित्रित किया है, जिसमें उन्होंने मैना को सम्बोधित करते हुए भारत सरकार के मंत्री व दलगत राजनीति के कीचड़ में धँसे नेताओं पर व्यंग्य किया है। उन्हें देश की इस स्थिति पर कष्ट होता है और चिन्ता व्यक्त करते हैं कि आखिर क्या अन्त होगा ऐसी सोच रखने वाली राजनीति का। दुष्यन्त जी की इन पंक्तियों में उनका यही स्वर मुखरित हुआ है-

"मुझे बतला तेरी राहों में बाधक,

हर विघ्न को कुचल दूँगा

यदि मेरे दल से उकतायी हो

सत्ता के साथ दल बदल दूँगा

थोड़ा-सा धीरज रख,

बोल मेरी मैना तुझे क्या दुख है?'[8]

सहभागिता का अभाव

संगठित समाज ही एक संगठित राष्ट्र का निर्माण करता है। जहाँ समाज स्वयं संगठित न हो वहाँ सहभागिता का तो प्रश्न ही नहीं उठता। दुष्यन्त कुमार जी ने अपने काव्य में देश में होने वाली सहभागिता की कमी पर अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने महसूस किया कि आज व्यक्ति दूसरे के कष्टों में सहायक नहीं बन रहा। एकाकीपन बढ़ता जा रहा है। व्यक्ति अपनी ज़रूरत का सामान स्वयं खरीद कर लाना पसंद करता है, वह किसी का कृतज्ञ नहीं बनना चाहता। यह कार्य उतना अनुचित नहीं है किन्तु कालान्तर में इसी कारण मानवता का अवमूल्यन प्रारम्भ हो जाता है तब इसकी उपयोगिता का भान होता है कि जब व्यक्ति के पास कम संसाधन थे, वह एक दूसरे से मांगकर अपने कार्य कर लेता था। तब समाज में आपस में सहभागिता, सहयोग की भावना बहुत रहती थी और साथ ही नवीन संस्कारों का भी उदय होता था। आज मानव आत्मनिर्भर तो हुआ है, उसने आर्थिक व भौतिक उन्नति तो कर ली है किन्तु उसका सामाजिक स्तर लगातार गिरता जा रहा है, जिस कारण देश के प्रति जिम्मेदारी का एहसास भी कम होता जा रहा है। देश की सुरक्षा में तैनात सिपाही के शव को देखकर संवेदनायें नहीं उमड़ने लगी हैं। बल्कि व्यक्ति की सोच इस ओर उन्मुख हो जाती है कि सरकार उसके परिजनों को आर्थिक मदद तो करती है और वह भी नौकरी के द्वारा धन कमा ही रहा था। आज ऐसी विचारधारा संवेदना और सहभागिता के भाव के लिए घातक हो रही है। दुष्यन्त कुमार की कविता 'झील और तट के वृक्ष' की इन पंक्तियों से उनकी इसी सहभागिता के अभाव की पीड़ा को महसूस किया जा सकता है-

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

"सुनते हैं पहले कभी बहुत जल था इसमें,

प्रतिदिन श्रद्धालु नगर वासी

इसके तट पर

जल-पात्र रिक्त कर जाते थे।'[9]

खोखली परम्परा का विरोध

देश की स्थिति पर विचार करते समय दुष्यन्त कुमार का ध्यान परम्पराओं की ओर जाता है जहाँ वे पाते हैं कि समाज किस प्रकार जाति, धर्म, परम्परा की भेड़चाल में पड़कर अवनति के मार्ग पर बढ़ता ही चला जा रहा है। जहाँ नवीन वैज्ञानिक खोजों से अन्य देश लगातार उन्नति करते जा रहे हैं, वहीं भारतीय जनता अंधविश्वास को छोड़ने में झिझकती है और इस कारण वह खुलकर अपनी योग्यता का परिचय नहीं दे पाती। दुष्यन्त कुमार एक ऐसे सशक्त साहित्यकार हैं जो समाज की प्रत्येक बुराई का खुलकर विरोध करते हैं। उनका काव्य इस बात का प्रमाण है कि वे किस प्रकार देश की उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए कृत संकल्प हैं। उनकी कविता 'अच्छा-बुरा' में उनका परम्परा के सम्बन्ध में प्रकट किया गया मत इस प्रकार है-

"यह कि चुपचाप पिये जायें

प्यास पर प्यास जिये जायें

काम हर एक किये जायें

और फिर छिपायें

वह ज़ख्म जो हरा है

यह परम्परा है।'[10]

क्रान्ति का आह्वान

राजनीतिक कुचक्रों से आहत हो, दुष्यन्त कुमार का व्यथित मन क्रान्ति की आग प्रज्ज्वलित करने के लिए छटपटा उठता है। दुष्यन्त जी ने देश की जनता के लिए संदेश दिया है कि जब शासन सत्ता निरंकुश हो जाए, मानवता का विनाश होने लगे, सहनशीलता टूटने लगे, तो जनता के पास क्रान्ति के अतिरिक्त कोई हथियार शेष नहीं होना चाहिए, डटकर विरोध करना चाहिए और विरोध होना स्वाभाविक भी है। क्योंकि जब अत्याचार भ्रष्टाचार, दुराचार की आग में जनता झुलसने लगती है तो वह विरोध करने पर विवश हो जाती है। दुष्यन्त की कविता 'विवेकहीन' में उनका यही क्रान्ति का स्वर स्पष्ट दीख पड़ता है जो सहनशीलता की सीमा के टूटने पर प्रारम्भ होता है।

"हर कुण्ठा क्रान्ति बन जाती है जहाँ पहुँच

लहरों की सहनशीलता की उसी सीमा पर

आक्रमण किया है हवाओं ने

स्वागत! विक्षुब्ध सिन्धु के मन का

स्वागत! हर दुखहर आन्दोलन का।'[11]

जीवन की तलाश

दुष्यन्त कुमार के काव्य में प्रेम, संघर्ष, वेदना, समन्वय, राजनीति, मानवता, त्याग, बलिदान, जीवन के विभिन्न अनुभवों के साथ-साथ उनका दार्शनिक पक्ष भी उभर कर सामने आता है। जीवन के सुख-दुख भोगते-भोगते मानव मन जब नीरसता की ओर उन्मुख होने लगता है, तो वह दार्शनिकता की ओर चल पड़ता है। दुष्यन्त जी व्यक्ति के जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हुए उसके अनेक अनुभवों को उजागर करते हैं। 'ज़िन्दगी कहाँ' कविता में उनका

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

दार्शनिक स्वरूप सामने आता है। उन्हें अनुभव होता है कि जीवन का अन्त मृत्यु ही होती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति जो कुछ भी करता व सीखता है वह उसके अनुभव को बढ़ाता है। मनुष्य जीवन के बोझ तले दबा हुआ जीवन को ढोए जा रहा है। कवि को महसूस होता है कि जीवन का वास्तविक स्वरूप कब्रों या दरगाहों, मन्दिर या श्मशानों में दिखाई देता है। कवि की इन पंक्तियों में उनका यही स्वर दिखाई देता है-

"ज़िन्दगी दिखाई देती है

कब्रों या दरगाहों में

मन्दिर या श्मशानों में

मिट्टी से दबी हुई

मिट्टी में मिली हुई

पूजा के बेलों पर काँपती

या घुटनों के बल झुकी हुई।'[12]

भौतिकतावादी दृष्टिकोण

कवि दुष्यन्त कुमार जी ने भौतिक सुखों को प्राप्त करने वाले मानव की उस मनोदशा को भी चित्रित किया है जो केवल स्वयं की सुख सुविधा का ही ध्यान रखता है। वे जीवन को केवल जीने का साधन मात्र मान लेते हैं, देश के सम्बन्ध में उनका कर्तव्य जड़ हो गया है। मानव समाज के प्रति अपने कर्तव्यों व दायित्वों से बचने का प्रयास करता है। देश के लिए संघर्ष करना उसकी प्राथमिकता में नहीं रह गया। वह केवल स्वार्थ परक खोखला जीवन जीने में संलग्न है और वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह जानता है कि जहाँ भी जीवन को सुलझाने का प्रयत्न करता है समस्यायें और जटिल होती जाती हैं, जिस कारण वह उस क्षेत्र को छोड़ केवल भौतिक सुखों को प्राथमिकता देने लगा है। दुष्यन्त कुमार का ऐसा ही द्वन्द्व उनकी कविता 'ओ मेरे प्यार के अजेय बोध' की इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है-

".... जीवन का ज्ञान है सिर्फ जीना मेरे लिए

इससे विराट चेतना की अनुभूति अकारथ है

हल होती हुई मुश्किलें

खामखा और उलझ जाती हैं

और ये साधारण सा जीना भी नहीं जिया जाता है।'[13]

संदर्भ सूची

[1]. सूर्य का स्वागत, दुष्यन्त कुमार, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ0 29.
[2]. वही, पृ0 36.
[3]. वही, पृ0 42.
[4]. जलते हुए वन का बसन्त, दुष्यन्त कुमार, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1999, पृ0 49.
[5]. वही, पृ0 75.
[6]. वही, पृ0 34.
[7]. वही, पृ0 55.
[8]. वही, पृ0 65.
[9]. आवाजों के घेरे, दुष्यन्त कुमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, चौथा संस्करण, 2002, पृ0 23.
[10]. वही, पृ0 28.
[11]. वही, पृ0 31.
[12]. वही, पृ0 65.
[13]. वही, पृ0 26.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X